ॐ

सदानीरा

विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका

वर्षा 2018

अ च र ज

अंक-20 | वर्ष-6
जुलाई-सितंबर 2018
ISSN 2321-1474

प्रधान संपादक
आग्नेय
संपादक
अविनाश मिश्र

आवरण : रिया रागिनी — प्रत्यूष पुष्कर
कवियों-लेखकों की तस्वीरें गूगल से

sadaneera.com /Sadaneera

प्रधान कार्यालय :
बी-207, चिनार वुडलैंड,
कोलार रोड, भोपाल-462016
मध्य प्रदेश
फ़ोन : 0755-2424126, 9303139295
agneya@sadaneera.com

संपादकीय संपर्क :
171, गिरधर एंक्लेव,
साहिबाबाद, ग़ाज़ियाबाद-201005
उत्तर प्रदेश
मो. : 9818791434
editor@sadaneera.com

रचनाएँ भेजने के लिए :
submit@sadaneera.com

सहयोग-सदस्यता

एक अंक के लिए : 100 रुपए, 5 डॉलर
संस्थाओं के लिए : 700 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 500 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10,000 रुपए

'सदानीरा' डाक से मँगाने के लिए सदानीरा के नाम संपादकीय पते पर चेक/ड्राफ्ट भेजें या देना बैंक (अरेरा कॉलोनी, भोपाल, IFSC : BKDN0811184) के करंट अकाउंट नंबर : 118411023949 में राशि जमा करके हमें ईमेल या फ़ोन पर सूचित कर दें।
© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पत्रिका का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम, जिसमें सूचना संग्रहण और सूचना संसाधन की विधियाँ सम्मिलित हैं, द्वारा प्रकाशक अथवा संपादकों की पूर्वानुमति के बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता सिवाय एक समीक्षक के जो समीक्षा में संक्षिप्त अंशों को उद्धृत कर सकता है। प्रकाशित कृतियों का कॉपीराइट लेखकों / अनुवादकों / कलाकारों का है। भेजी गई रचनाओं पर अगर सात दिन के भीतर कोई उत्तर नहीं मिलता, तब रचनाकार उन्हें अन्यत्र भेजने के लिए स्वतंत्र हैं। मुफ़्त अंक और नमूना प्रति भेजने की सुविधा नहीं है, कृपया इस संदर्भ में कोई फ़ोन, ई-मेल या पत्र-व्यवहार न करें। 'सदानीरा' की सदस्यताएँ केवल प्रिंट इश्यू के लिए हैं। प्रिंट में अनुपलब्ध कुछ अंक डिजिटल फॉर्म में sadaneera.com के **पूर्व अंक** सेक्शन में हैं और वहाँ निःशुल्क पढ़े और सहेजे जा सकते हैं।

क्रम

वर्षा 2018

अ च र ज

शुरुआत 6
आग्नेय

विशेष
कवि की एक व्यापारिक यात्रा 9
अनुवाद और प्रस्तुति : उदय शंकर
आत्मज्ञान में 'आश्चर्य' क्या है 22
वागीश शुक्ल

जापानी कविता 33
मात्सुओ बाशो
अनुवाद और प्रस्तुति : सौरभ राय

ईरानी कविता 40
फ़ोरो फ़ारुख़ज़ाद
अनुवाद और प्रस्तुति : सरिता शर्मा

एकाग्र 46
बातें/कविताएँ/सफ़र : मनीषा जोषी
अनुवाद : सरिता शर्मा और सावजराज

चिट्ठियाँ 66
फ्रीदा काहलो
अनुवाद और प्रस्तुति : रंजना मिश्र

68 **ग्राफिक गल्प**
मीनाक्षी जे — जे सुशील

83 **उर्दू कविता**
विनीत रज़ा

87 **पाठ**
रिया रागिनी — प्रत्यूष पुष्कर

95 **ओड़िया कविता**
प्रमोद सर
ओड़िया से अनुवाद : सुजाता शिवेन

107 **हिंदी गद्य**
मानव कौल

113 **हिंदी कविता**
मोहन राणा

120 **सौ शब्द**
अविनाश मिश्र

जितनी देर तुम लेखक हो

आग्नेय

हिंदी के अधिकांश समकालीन लेखकों से, उनकी नाराज़गी का ख़तरा उठाते हुए, यह सवाल पूछा जा सकता है कि क्या जीवन, राजनीति और अस्तित्व के प्रति उनमें कोई मनोवेग है या नहीं? इसका एक पूरक प्रश्न यह भी हो सकता है कि वे अपने जीवन का एक दिन कैसे जीते हैं? ऐसा नहीं है कि इन सवालों का जवाब इन लेखकों के पास नहीं है। कुछ लेखक इस सवाल को यह कहकर टाल सकते हैं कि एक लेखक का जीवन इतने विरोधाभासों से घिरा और भरा रहता है कि उसके जीवन की कोई भी जानकारी उसके जीवन के बारे में बहुत अधिक नहीं बता पाएगी।

वे यह भी कह सकते हैं कि लेखक के बारे में जानना है तो वह उसके लेखन से ही जाना जा सकता है, शायद यही सबसे अधिक प्रासंगिक और प्रामाणिक होगा। कदाचित् किसी भी लेखक के निजी जीवन में ताक-झाँक करना ठीक नहीं समझा जाता है और वह सबसे अपने को छिपाकर रखना चाहता है। दूसरे कुछ लेखक इस सवाल का तत्काल उत्तर देने के लिए तत्पर दिखाई दे सकते हैं। अगर ये लेखक इस सवाल का उत्तर न भी दें तो उनके पीछे खड़े तरह-तरह के संगठन उनके लिए रेडीमेड उत्तरों के थान के थान खोल देंगे। लेकिन क्या इस तरह के उत्तर किसी को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त होंगे। सच्चाई यह है कि हिंदी का समकालीन लेखक एक ऐसा जीवन जीता है या ऐसा जीवन जीने के लालायित रहता है जो किसी भी विराट कौतूहल, जीवन के किसी सम्मोहक चमत्कार और जीवन के किसी भी बुनियादी संघर्ष से जुड़ा नहीं है। उसके जीवन जीने का तरीक़ा बेहद नीरस, आवेगहीन, इकहरा और अवसरवादी होता है। वे उस मध्यवर्ग की पीठ पर चिपके जोंक और किलनी की तरह हैं जो अपनी ओछी, ठिगनी और लुटेरी जीवन-प्रणाली को बचाए रखने के लिए दिन-रात एक किए रहते हैं। न उनको दिन में चैन है और न रात में। उनका एक ही सपना है—उन सीढ़ियों पर चढ़ते जाना जिन्हें सफलता की दीवार पर सत्ता ने टिकाए रखा है। आज